



रु

अथ वैराट् को विदालिषा है ॥ ॥ अथ वेदसास्त्रमेति न पुरष कहे है ॥
रु कहे र पुरष कलोः दुसरो अहे र पुरष कलो ॥ और तिसरो जित म प
रष अहे रा तित कलो ॥ ये तिसरा पुरष वेदसास्त्रमे कहे ॥ प्रथम अहे र प
रष कौन कौ कहिय ॥ अहे र पुरष कौनः वेदसास्त्रमे वैराट् सरूप कलो है ॥
सहस्रसीर्षा पुरुष कलो ॥ प्रापुष के अन्न नवरन हेः अन्न तनेत्र हेः अ
न्न तमुष हेः और फेर वैराट् पुरष के वार भुजा कहे ॥ दोर पांर कहेः पा
कि अंग अंग विषे बौ दालो क कहेः सात लोक निवे के नामः अतलः वित
लः सुतलः रसातलः महातलः तलातलः पातालः असात लोक वैराट् पुरु
ष के कमर से तले कहे ॥ इन सात लोक मेः कौन कौन रहे त हेः अतलः वित
लः सुतलः रसातलः इन वार लोक में राहे त हेः और महातल में वलि

राजा रसातल मे रा ज्ये करत हैः और महा तलातलः पातालः इन ति
न लोक मेः नागर रहत हेः तिन नाग को राजा सस नग हेः सो पातल में रहत हेः

राजा रसा तल मे रा ज्ये करत है: और महा तला तल: पाताल: इन ति
न लोक में: नागर रहत हैं: तिन नाग को राजा ससन गहें: सो पाताल में रहत हैं:
इन से सनाग के ऊपर: स्वर्ग सांड हैं: से सनाग कुर्म के ऊपर हैं: सो कुर्म जल
में ल में हैं: और पाताल में: वौरासि कुंड नर्क के है: जो कोई जीव प्रसुभ कर्म
करत हैं: तेरे हां नर्क के कुंड में भोग करत है: तां हां जम: गुरजन सो मारत
है: सांप: विद्रि: प्रादि दे के: काटत हैं: सो लिंग सरीर भोगत हैं: प्रसुभ कर्म
को भोग करत है: जब पुन र्क जावना भोग करार के: वौरासिल छजों इन में
भोग्ये करी के: जब पाप पुन्ये वरावर होई: तब मनुष्य जो इन में और तारले: जो म
नुष्य जो इन में प्राई के: जो सुभ कर्म करने लग्यो: तो स्वर्ग लोक जाई गो ॥
और: फेर प्रसुभ कर्म करने लग्यो: तो पाताल में वौरासि कुंड में जाय गो:
एतो प्रसुभ कर्म कि प्राति कही: अव वैराट के कमर के: सात लोक ऊपर

हैं तिनके नाम सुनोः भुव लोकः भव लोकः स्वर्ग लोकः मह लोकः जन लो
कः तप लोकः स सात लोक ऊपर के कहेंः अब इन लोक में कौन कौन रहेंः
प्रथम भुव लोक में मनुष्य रहत हैंः वारषांन के जिव आदि दे केः जरा युजा
षांनः स्वेत जाषांनः इड जाषांनः ऊर्ध्व जाषांनः सवारषांन के जिउ आदि
दे केः वसत हैंः इन ऊपर भव लोक हैः तीन में भुत प्रेत कि जो इन आदि दे
केः सवर रहत हैंः तिन ऊपर स्वर्ग लोक हैः स्वरग में र के सिरो भाग ऊपर हैंः
तिन में इड आदि दे के सब देव तार रहत हैंः सेहा प्रस्थान और कहें हैंः तीन प्र
स्थान हैंः एक ब्रह्मा कोः एक विष्णु कोः एक ईश कोः इन तिन प्रस्थान को
कृत प्रस्थान कहि सः इहां सहकां मि सुभ कर्म करन हारवांती होत हैः
जब अन्य धि न्ये हो सः तब वे मृत लोक में आ सके जन्म लेवैः जन्म ले के

जंन मले के जो प्रसुभ कर म करे तो पाताल में बौरा सी कुंड जे हैं ते ही में
प्रापति होई के प्रसुभ कर्म को भाग करेः और जो सभ कर्म करे जो फेर

जंन मने के जो प्रसुभ कर म करे तो पाताल मे वो रासी कुंड जे हे ते ही मे
प्रापति होई के प्रसुभ कर्म को भाग करे: और जो सुभ कर्म करे: तो फेर
स्वर्ग्य लोक को पावे: पुनि प्रावाग व न ते रहित ना होए: सुभ प्रसुभ कर्म
ते प्रावग व न रहित ना होवै: इन स्वर्ग्य लोक के अपर: मह लोक हे: मह
लोक मे: धुर्व रहत हे: सो सुसुमार वक्र के अपर हे: इन सुसुमार वक्र के
अपर सुरजर रहत हे: बंड मां और सप्त रीति: नृचित्र: तारामंडल को आदि
दे के: मह लोक के निवे: सुसुमार वक्र हे: मह लोक के अपर जंन लोक हे:
फेरत प लोक हे: इन तिन लोक मे मानसि सिधिर रहत हे: भृगु आदि
दे के: तिन अपर सत् लोक हे: ऐतिवार लोक को: आस्त लोक कहि ऐ:
इन लोक न मे सुर्ज्य बंड मा: अग्नि को प्रकास ना ही हे: इहां पुनि सुते प्र
कास कहि हो: एसा त लोक मे तिन अस्थान कहि हे: विष्णु के प्रस्थान

कोरमा वैकुंठ कलाः शून्य और के लासः महों देवकों प्रस्थान क क लोः ई
नतिनः प्रस्थान मेंः बारवार प्रकार की मुक्ति कहिः मुक्ति के नामः सा लोकः
समिप्यः सा रूपः सा जो जः जे ते न व धा प्रकार कि भक्ति करत हैंः निहकां
मिहोरे के करेः तो के लास में बार प्रकार की मुक्ति को पावेः जे ते ने हे कामी
हों ए के जग्यदि करत हैंः ते ब्रह्मा के सत लोक मेंः वारि प्रकार की मुक्ति को
पावेः और जे सह कामि की ई धारा के फल बांछे जग्यादि करत हैंः त
था भक्ति करत हैंः स्वर्ग लोक मेंः ब्रह्मा केः विष्णु केः महों देव केः प्रस्थान
कहेः तिन में प्राप्ति होत हैंः जग्यादि करत हैंः ते ब्रह्मा जी के प्रस्थान सत लो
क मेंः और जे ते विष्णु की सह कामि भक्ति करेः सो विष्णु के प्रस्थान विषे प्रा
प्ति होत हैः जे ते महों देव कि भक्ति करत हैंः ते महों देव के प्रस्थान क में प्राप
ति होत हैंः जे ते पुंन्य और भक्त क सोहतोः तिन नुसरग लोक में भोग करेः ज

व पुन्य छिं न भयोः तव फेर म त लोक में प्राई के जं न म ल योः जन म ले केः फे
र स्वरग लोक में प्राप्ति होईः जो अस भ करे म करे ने लग्योः तो पाता ल में

वपुन्यदिन भयो: तव फेरम तलोक में: आई के जं नमल यो: जनमले के: फे
 रस्वरग लोक में प्रापति होई: जो असुभ करं म करे ने लग्यो: तो पाताल में
 जाई के बोरासि कुंड में प्रापति होरे: के असुभ करम को भोग्य करन लग्यो:
 उर्ध्व मुल मधुसाया: ये वैराट को: गिता में वृद्ध कश कलौ हैं: उर्ध्व मुल
 हे निवे साया हे: और वैर जो हैं: सो पत्र हैं: इन वृद्ध मुल को जो जाने:
 तिन को वेद को वक्ता कहि रे: इन रूप को चार पार नहि: आदि अंत न
 ही: और इन संप्रदा पुन नहि: इन सो स्थान मुल को: प्रसंग सास्त्र कर
 छे दे तिन के परे मारग हैं: तिन मार के गये: फेरन आवे: आवाग व
 न धेरहित होवै: श्री: श्री कृष्ण जिने लो: के जा हां बंद मासूजे को प्र
 कासु नहि: अव्यक्त प्र छेर पुरुष क लो: ता हां के गये फेर आवाग
 वन में न आवे: सोमेश परम धाम हैं: और उत्तम पुरुष प्र छे राति

क

तः इन्ते प रे हेः अव वैरा ठ के अंग विषे वो दा लोक हेः इन् के वरन मुल विषे
वो दा लोक हेः पिडरी न विषेः रसा तल हेः चुं ठ न विषेः सुतल हेः जां घन विषे
वितल हेः जां घन ऊपर कं मर के निवेः अतल हेः कं मर विषेः भुर्व लोक हेः
ना भ विषेः भवर लोक हेः हिर दे विषेः मह लोक हेः कं ठ विषे जन लोक हेः
वदन विषेः तप लोक हेः ब्रह्मर ध विषेः सत लोक हेः इन् के वाहन मेः इन्द्र
देवता हेः ते श्रवन के हेः नासिका केः विषे अस्व नी कु मार देवता हेः मुष
विषेः अग्नि देवता हेः नेत्र विषेः सुर्ज देवता हेः पाप न जो हेः सोरा न्द्रि
न हेः डाठ जो हे सो ज म हेः वा की ल स जो हेः सो माया हेः ऊपर के बड़ वि
षे ल जा हेः निवे के ओठ विषेः लोभ रे हे त हेः दोर अस्था न विषे धर्मः हे
रुत हेः वा के कोष विषेः सात दीपः सात समुद्र हेः पर धत जे ते वा के लड
हेः नदि जे ते वा के नाडि हेः दृष्टे जे हेः ते वा के रोम हेः

मांथे के वार जो हेः सो मे घ हेः बंद्र मा जो हेः सो हिर दे को देवता हेः अवब्रं
सांड को विस्तारः ऊन वास को ट जो ज न हेः जो ज न को न को न क ही मः

मांथे के वार जो हैं: सो में घहें: बं ड मा जो है: सो हिर दे को देवता हैं: अव वं
त्मांड को विस्तार: उन वास को ठ जो जन हैं: जो जन को न को न कही ए:
वार को स को जो जन कही ए: इन बो दा लोक ऊपर: आठ आवरन हैं:
सो एक एक ते: दस गुंनों बठ तो बठ तो बो डे हैं: अव ई के नाम: पृथि:
को: जल को: तेज को: वा ए को: आकास को: बुध को: तेज को: धौं
को: मन को: आठ मो काल माया को: इन आठ आवरन की: प्रठ सत्तें:
हैं: तिनने आवरन को घेर रहि हैं: प्रष्ट आवरन संजु त्त: बो दा लो
क वैराट क लो: तिन को घेर पुरुष क लो: इन को वृत्तांड क लो क
लो: इन को सुषन क लो: इन वृत्तांड में: पां व देवता व डे हैं: वृत्तां:
विष्णु: रुद्र: नाश मन सदा सिद्ध: ए पां बो देवता कहे: ए सब

मिल एक यह वं सों उभयोः सोई न कों प्रविष्ट परवान कलोः ये सें वृत्तां ड अ
अप्ये र भगवान के निमेष्ये अंगे अणं त कोटि उपजत विपत हेंः यह का
ल माया अंस क जोग कर कहेंः :: अव नाद और विंद को सुनो विचारः
विंद ते भयो सकल संसारः नाद ते भयो वेद जो यारः वेद की माया
ये त्रिक हीः ई न कों वार थं भन तेरी वेद भरेः सो वेद न विषेः तीन को
ड कहेंः एक कर्म कांडः दुसरोः ज्यासना कांडः तिसरो ग्यान कांडः
और करम पुनि तीन प्रकार के कहेंः तिन कि गहन गति कहेंः सुभ
कर्म कीः कर्म कांड कहें एः न व धा प्रकार की भक्ति को उपासना
कांड कहें जेः और सरवत्र वं करी जा नीवोः तिन को ग्यान कांड क
हें जेः करम कांड की प्रापतिः वे कुं ठ कहें जेः ग्यान कांड की प्रापति
नाराई न की वेतने प्रकृति विषे कहें जेः अवती न करम कहेंः

एक कर्मः दुसरो विकर्मः तीसरो अकर्मः अव सुभ कर्म सुत्रोंः कसि अ
दिदे के तिर्थ करेः गमा आदि दे के सरा ध करेः वं ई न अपा रि दे के वन

एक कर्मः दुसरो विकर्मः तीसरो अकर्मः प्रव सुभ कर्म सुभोः कसि अ
दि दे के ति थ करेः गमा आदि दे के सरा ध करेः वं इ ई न आदि दे के व्रत
करेः वारो वेद आदि दे के आवन करेः महा पस्या आदि दे केः तप करेः
कुल धर्म साधेः इन को सुभ कर्म कहियः इन सुभ कर्म कि प्राप्ति स्व
द ग लोक लोक हिः स्वर्ग में जाए के सुभ कर्म को भज्ये करेः जब पुन
छिन भयोः तब के मृत लोक में आई के जैन मल प्रोः ये सुभ कर्म को फल
प्राप्ति कलोः ए सुभ कर्म कलोः सास्त्र रहित जो वर्जित कर्म हैं ते करेः ता
को अ सुभ कर्म कहिजेः झुट बोलेः वेद सास्त्र कि निज्ञा करेः पर धनः
पर अस्त्रि की बोरी करेः सिध साधः संत को द्रोहि करेः भक्ति मारग
को छेदन करेः कसाई कर्म करेः दगाः छल उवाठनः वसि कर्म मा

नः माह न को आदि देयकेः यस्य अंतर्गत असुभ कर सकरे॥ यस्य कर मके करता को जव सरिर छुटेः तव जे मले ते को आवे॥
सो दधिन माग मे महा विषर राह मे ले जावे॥ आगे वेतर नि नदी हे त हा ई तारे के धर्म राज के पास ले जावो॥ ओर जे ले आ
घोर कर्म करे हते ते सो रूप देवो॥ ओर जे मिमाचना दिवाईः करे वो तासि कुंड मे डराय द्योः नाक को भोग करत लाग्योः
करे सो रासि लव जो ई न मे भोग करे गो जव ~~अ~~ ^अ ~~क~~ ^क ~~पु~~ ^{पु} ~~न~~ ^न ~~व~~ ^व ~~रा~~ ^{रा} ~~व~~ ^व ~~र~~ ^र हो तव मनुष्य जो ई न मे आ ए म ^{पाप}
त लोक में अवतार लेवे॥ अव जो संवि प्रावधन अव सुभ करं स कहते फेर असुभ
करं स करे गो जो सुभ करं स के सांचित ओर प्रावधन करं स हो ई ए तो फेर सुभ करं स करे
गो ए असुभ करं स कि प्रपति कहि॥ अथ निह करं स को न को कहि हें नवधा प्रकार कि भ
क्तिकरो॥ अधन किरतन विष्णु सनतः परत सेवतः अरुता बंदना दाल भावः आतं मति दे
दंत यत नवधा प्रकार कि भक्तिकरे दान पुन्य ते म प्रत करे ता के फल की ई छु ए पके ता करे
जित तो करे॥ लो ^ए ~~ए~~ ^{नि} ~~नि~~ ^ह ~~ह~~ ^{कां} ~~कां~~ ^{मः} ~~मः~~ ^व ~~व~~ ^{हो} ~~हो ^य ~~य ^{के} ~~के ^{करे} ~~करे ^{तो} ~~तो ^ई ~~ई ^{तो} ~~तो ^{प्रा} ~~प्रा ^{पति} ~~पति ^{सत} ~~सत ^{बो} ~~बो ^क ~~क ^{वे} ~~वे ^{कुं} ~~कुं ^ठ ~~ठ ^{दि} ~~दि~~ ^{के} ~~के ^{ला} ~~ला~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

समें प्रापति होई चार प्रकार कि बुक्ति को पावे तह सुप-य फेर आवे सन कादि कन
के म म म के म ग विं स य म त लोक में आए सो ग छ स सो ग न में न न म सो ^१ ~~१~~ ^२ ~~२~~ ^३ ~~३~~ ^४ ~~४~~ ^५ ~~५~~ ^६ ~~६~~ ^७ ~~७~~ ^८ ~~८~~ ^९ ~~९~~ ^{१०} ~~१०~~ ^{११} ~~११~~ ^{१२} ~~१२~~ ^{१३} ~~१३~~ ^{१४} ~~१४~~ ^{१५} ~~१५~~ ^{१६} ~~१६~~ ^{१७} ~~१७~~ ^{१८} ~~१८~~ ^{१९} ~~१९~~ ^{२०} ~~२०~~ ^{२१} ~~२१~~ ^{२२} ~~२२~~ ^{२३} ~~२३~~ ^{२४} ~~२४~~ ^{२५} ~~२५~~ ^{२६} ~~२६~~ ^{२७} ~~२७~~ ^{२८} ~~२८~~ ^{२९} ~~२९~~ ^{३०} ~~३०~~ ^{३१} ~~३१~~ ^{३२} ~~३२~~ ^{३३} ~~३३~~ ^{३४} ~~३४~~ ^{३५} ~~३५~~ ^{३६} ~~३६~~ ^{३७} ~~३७~~ ^{३८} ~~३८~~ ^{३९} ~~३९~~ ^{४०} ~~४०~~ ^{४१} ~~४१~~ ^{४२} ~~४२~~ ^{४३} ~~४३~~ ^{४४} ~~४४~~ ^{४५} ~~४५~~ ^{४६} ~~४६~~ ^{४७} ~~४७~~ ^{४८} ~~४८~~ ^{४९} ~~४९~~ ^{५०} ~~५०~~ ^{५१} ~~५१~~ ^{५२} ~~५२~~ ^{५३} ~~५३~~ ^{५४} ~~५४~~ ^{५५} ~~५५~~ ^{५६} ~~५६~~ ^{५७} ~~५७~~ ^{५८} ~~५८~~ ^{५९} ~~५९~~ ^{६०} ~~६०~~ ^{६१} ~~६१~~ ^{६२} ~~६२~~ ^{६३} ~~६३~~ ^{६४} ~~६४~~ ^{६५} ~~६५~~ ^{६६} ~~६६~~ ^{६७} ~~६७~~ ^{६८} ~~६८~~ ^{६९} ~~६९~~ ^{७०} ~~७०~~ ^{७१} ~~७१~~ ^{७२} ~~७२~~ ^{७३} ~~७३~~ ^{७४} ~~७४~~ ^{७५} ~~७५~~ ^{७६} ~~७६~~ ^{७७} ~~७७~~ ^{७८} ~~७८~~ ^{७९} ~~७९~~ ^{८०} ~~८०~~ ^{८१} ~~८१~~ ^{८२} ~~८२~~ ^{८३} ~~८३~~ ^{८४} ~~८४~~ ^{८५} ~~८५~~ ^{८६} ~~८६~~ ^{८७} ~~८७~~ ^{८८} ~~८८~~ ^{८९} ~~८९~~ ^{९०} ~~९०~~ ^{९१} ~~९१~~ ^{९२} ~~९२~~ ^{९३} ~~९३~~ ^{९४} ~~९४~~ ^{९५} ~~९५~~ ^{९६} ~~९६~~ ^{९७} ~~९७~~ ^{९८} ~~९८~~ ^{९९} ~~९९~~ ^{१००} ~~१००~~

समैं प्राकृति होई चार प्रकार कि बुक्ति को पावे तह सुप-य फेर आवे सनकादिकन
के सरापते जय विजय मृत लोकमें आए सो राहु सजो यनमें जनम लयो वै कुंठ तो स्वाति
कय स्थान कहलौ तो ताहा सनकादिकन को नाम सके से उपज्यो और जय विजय सावि पनु
कि और सनकादिकन तो बाल कृष्ण रहते और मानसि पुत्र रहते और ईश को वर जे काहे ओ
र ईश को सराप काहे को दत्त भय और वैकुण्ठ में सराप लगे के से सो तो जय विजय राहु हाते
पन्न भय और भक्ति मारग के दो विषय और साजो ज्यामुक्ति को पाए सो मुक्ति के से के फिरे
रेहे प्रकार वैकुण्ठ में आवागद नहे रे हो निह का म प्रकट करं म की प्राप्ती कहि ऐती न प्रका
र के कर म कहि पुं पाई न प्रकार के कर म की जे हैं न गती है जान नहि जात है जो सुभ क
सिद्ध रिषे तो सुभ उपजावत है याहि ते जह न गति कहि जान वे नहि आवत हैं

तो ऐसी नशा का करं जानि प नी की तरह सो ईक दम को विवे आ श्री न न हो ए कहते
भी कछाजी सरजु न मुकुल हो के हे अउ न सव धरि को पगि करिके एक मे से सर
न ग्रहे ती न के सर अहंकार पाप को ना स हो जग को ए और उन को मुक्ति को बल हो ऐ पांच
वि त हां के ग ए ने फोर आ वा ग व न में आवें तो निज धरं पति न में आ श्री त हो ए के नि
ज धाम को साधिए तो आ वा ग व न करे हित हो प और नि न प्र कार के जो हे कर म
ति न के वंधन में न परे जो सुभ कर म करे तो नि आ श्री त हो वे को किजे और जे सत
तुं र व ते अ सु भ करं म के न जी क न जावे और फल कि ई द्वा रा य के सुभ कर्म ना किजे जो क
दी फल कि ई द्वा रा य के कीजे तो सुभ कर म को भोग कर तो परे भोग कर म दु ट त हे असुभ
कर म करे तो जे तो असुभ को भोग करे और जो सुभ कर म कर ही तो ते तो सुभ कर म को भोग कर अम

असुभ और नि और नि ह कां म को भोग करे तव कर म दु ट त हे जे स लो ह कि वे ड से जो पाउ ना धे तो पन
पाउ बांधे और जो सुने कि वे ड सो पाउ बांधे और जो जडाउ कि वे ड सो पाउ बांधे तो पन पाउ में वे

असुभ और निओर निह कांम को भोग करे तब करम दुष्ट है। जैसे लोह के वेडि से जो पाउ बांधे तो पन
पाउ बांधे और जो सुने कि वेडि सो पाउ बांधे और जो जडाउ कि वेडि सो पाउ बांधे तो पुन पाउ में वे
डा बांधि रहे ताथे रवे करम के बंधन में ना पडे कोइ ए सो जो असुभ करम किजि रहे तो पन भोग
कराइ के छोडे और जो सुभ करम करे कोइ जो के हे के कीजे तो पन भोग कराइ के छोडे ताथे
रवे करम के बंधन में ना परोर कोइ ॥ कहै श्री तारतंत मा नारे सोइ जो कोइ ए से ~~सोइ~~ कहै के हम
को करम कहा करिहें हम तो सुपन देखत हैं हम तो श्री धाम में बैठे हे सह सुपनो दुष्ट है
सो सुपनो से करम जो किजे सो हम को कहु ये लागत नाहि हे और सुपन तो हमारे
वास्ते वना यह ताथे जो करम किजे सो हमारे कहा करोगे यति बुध कर के जो सुभ अ
सुभ करम करेहें सो दुष्ट है सो तो सहवास नायो कि बुद्धि ना होये ॥ काहे ते के जो सह सुपनो है

तो माया पंन सुपंनो हे तपो सो गों आदि दे के जो माया के कछु वस्तु हे जो दे हे संन मंधी कुट
माक विलापे ओ सव आदि दे के सो एह सां चे काहे को मानत हे इनको असत सुपनों का हे
नाहि मानत हे जो सुपनों हे तो एह आगि मे हाथ डारि के दे को तो वरि हे के ना वरि हे ^{वराहे}
तो सुपनों के आगि हे ता मे हाथ का हे वरि हे सो तो सां चिमां न के वेठे हे सडु कर के ग्यान कर
के तव सुपनों का हार लो ओर हं प को करम नाहि लागत हे काहे ने के विजं आं म को हे जब
फल लगि हे केर आमा जागा बुर को फल ना लगि हे ताथे वासना जो हे सो उन को सत चित
आन चला दि ए हे जो करं न मे हे सो ई कार जवा वे हे ताथे इन के मुल सतप जो मुल मिला वे मे हे
सो करन कहिए ओर जो माया मे सतप हे सो तो कारज कहिए तो करं न कहिए ओर जो

माया मे सतप हे सो तो करं न मे कहि जे जवल गेखवर नाहति वे हे चान नाहति तो श्री ता

माया में सतपहे सो तो कांन में चाहि जें जवल गेखवर नाहति चेहे चानना हति तो श्री ता
रतं मकरिके तवल ग सुभ असुभ करं प करे सो ज नाहि श्री तारतं म सुनो तव वेकर म कोष
समये जव श्री तारतं म सुनो श्री धनिजी को संदे सो पायो ताके विषे जोग दृष्ट वरु उन पं नहु
वो ते वरु अंगिने करम के वलन समनये इन को तव हनी गत लो उठि तव वं लगति उ
जति तव माया सब विवेकोर के भांसी सो तव सुभ असुभ करं प करने को चित काहे लेने लग्यो उन कैं
ह करं म सुभ पयो जो को न उपाये से मेरे पाउ को में लो तिन उपाय एक दो ज में लग्यो ऐत विन ब्रहे
नी के हे प्रेह चाल को चलाहे जवल ग माया में रहि ये तवल गे जे से जल विषे कमल रहत हे
पसे काम में परत ना करे जो वासना तिन को ओर जो वस्तु जल में पडे तिन को लप रस करे कसे डाल रहै

तो मायायन सुयंतो हे ह्यो सो लो आदि दे के जो माया कि क छुवत हे जो देह सन में धि कुं देव क विलाय ओ सब
आदि देय के सो ह सों वो काहे को मानत हे इन को अस न सुय नो काहे त ही मानत हे जो सुय ओ हे तो सह
अगामी साथ डारि के देखो तो बरि हे के ना बरि हे. स तो सुयन के आगि हे ता मे हाथ काहे बरि हे सो
तो लो विमान के बैठे हे लब्ध कर के. ज्ञान कर के. तव सुयनो क हार सो ओ रहम को करम ना ही
लागत हे काहे ते के बिज आम को हे. जब फल लगी हे तव आम ही को फल लागी हे. फो आम
की जागा बुर को फल ना लागी हे ता धेवा सना जो हे. सो उन के सतचित आनंद त छिन
हे जो कारण मे हे सोई कारण विषे हे ता धे. ईत के मूल स रूप जो मूल मिला वा मे हे सो का
रन कहिये. ओर जो माया मे स रूप हे सो तो कारण कहि स सो तो कारण के ही मे ओर जो
अवल गे. बर ना हति पे हे चान ना हति तो श्री तार म के करि के त वल गे सुभ अ सुभ

करम करे. सो जन ही श्री तार म. सुतो. तव के करम की मल्ल म पे तव श्री
वार म. ल को श्री धा विती की ल दे सो मा गो ता के मि में के म दि ल ल

करम करे सो जनही श्री तारतम्य सुतो तव के करम को प्रसन्न भये तव श्री
तारतम्य सुतो श्री धानेजी की सन्देश सो पायो ताके विषे जोग दिख बहउ
तयंतु यो ते बहउ अंगति करम केवल भसम भये इन को तव हतिगत लेउ ठि तव वल गति
उपजि तव पाया सब विषे हो सके भाँति सो तव लभ असुभ करम करतें को चितका
हे लेते लग्यो उनुं सह करम सुख ययो जो को तउ पाए से मेरे पिउ को मिल्यो
तिन उपाय के सो जमे लग्यो सलखिनी बहे न कि हे सह चाल को चलि हे
जव लग्यो पाये रहि स तव लग्ये जे से जल विषे क मल रहत हे समे करम
से परसना करे सो वासना तिन को श्री राजा वल्लु जल में पडे तिन को सप

तकरे कसे डारहे ससेमाने कोई जो कोई वासना है तिन कि सहि गति है अवल ह विवा
देवि स के सत जुग और तैता जुग दाप जुग कलि जुग सचा ऐं जुग कि ये के चौक डि भई स
सि ई ब कह सर चौक डि बों य कह ई दुराज करत है यलि ह जा चौक डि को ब्रह्मा को ये क दिन
कहिजे सो ब्रह्म के ये क दिन मे चौदा ई दु उपजे और भये ये क दिन मे यलि ह जा चौक डि कि
रात्रि कहि हे सो दिन से तिन के सहि ना स से सहि ना कि वास भये सो सो बाल से ब्रह्म कि आ
खल की कहि सो विष्णु की सक निमी य कहि ये से निमी य पामान थडि पहर दिन माल
वाल कहके सो सो वर स से सलि विष्णु की आवल कि कहि हे सो महा देव कि ये क
निमी य कहि हे ये से निमी य थडि पहर दिन माल बाल सो सो बाल महा देव कि आ

खल की कहि हे से निमी य थडि पहर दिन माल बाल सो सो बाल ता ए य राजी
कि आ खल कि कहि सो प्रवात ब्रह्मा ई दुराज भक्ति से लाल देव से

एवलकी कहि. ए सो ते निष धडि पह ददिन माल. वाल. लो लो वाल ता ए य राजी
कि आ एवला कि कहि. लो प्र वा न व ला हि र त ग र भ कि. ये का ने मी वे क ही. ये सि
नि मी व ध डि य ह दित माल. वाल. लो ह जा ए व ल से होई त व नि त्या वि हा र कि
ये क ति नि ष क हि जे. आव ला ता दि य ल मु द को ये क र ग हें तिन को आ न न द
के ति कहि जे. ए से सो लो आ न न द ज व होई त वे ए क म नु ष्य को आ न न द कहि
जे. ए से सो लो आ न न द म नु ष्य के ज व होई त व क र म दे व ता को ये क आ न न द
कहि जे. ए से सो लो आ न न द ज व हो ए त व वि न्न लो क को ये क आ न न द कहि जे
ए सो लो आ न न द ज व हो वै त व ल ग लो क को ये क आ न द कहि जे. ए से सो

आनन्द जब होवे तब प्रसा को येक आनन्द कहिजे ऐसे सो आनन्द जब होवे तब विष्णु को येक आनन्द
 कहिजे ऐसे सो आनन्द जब होवे तब ब्रह्मा देव को येक आनन्द कहिये ऐसे सो सो आनन्द ज
 जब होवे तब नारायण को येक आनन्द कहिये जब नारायण जी को हज्जार आनन्द होवे
 तब मुक्त प्रकृति को येक आनन्द कहिये ऐसे हज्जार आनन्द जब होवे तब एष्वर आनन्द गनि
 तब श्री श्री श्री स्वामिनि जी को लक्ष्यक मात्र आनन्द कहिजे ताके ये सब जिवत हैं ओ
 र ये आनन्द योगी न्यो वेद मो गी तो हे अवलु तो येक महद सिद्धि कहिये ये
 क मेधुनि श्री ली कहिये इनकार न कर ता हे महद सिद्धि को करता सव जनि
 क सुभाव है कारन अक्षर भगवान हे मान सी सिद्धि को करता वला हे

और कारन तार ईत को हे और मेधुनि सिद्धि को करता सव जनि और का
 रत तसा को हे अत्र ये चारि प्रकृति कहें जो सरो ये कहिये प्रकृति है एवमे वि

और कारन तार ईत को है. और मेधुना सिद्ध को करता सप्रमति. और का
रन प्रसा को है अवधे चारि प्रल कहें तो सुनो ये कति सप्रले हैं दुसरे ति
मीम प्रले है तिसरे प्राकृत प्रले है चौथो महा प्रले है प्रथमा तिस प्रले कहें.
लोक हिजे. जो सदा ताव उपजे. और लाव सये. तिनिये प्रले प्रसा को दित हो सः
तव मेधुनि श्री सि कहि. ता को प्रले होवे दल लोक ताई. प्रकृत प्रल यजव होवे तव सा
सा श्री ह्योदा लोक को प्रले होवे. जव नारयरा जागे. ले सकि निज्याये. और महा प्रल य
जव होवे तव अक्षर भगवानि जागे. तव महद श्री को आदि देइ के सब प्रसा को नाव
होवे ता को महा प्रल य कहिये. ईत तिनो श्री ली वल श्री ली पारिहें सो तो बेल

वा जित को देखत हारहें जेसे वाट के दगड ससे बेल तेरे हे के बेल को देखत हे बेल मे निरले
परे हेत हे अच जो बसो डहे सो वो विसत वा करि कहे सो पाचत च के नाम पृथ्वि आय
तेज वास आकास ५ पांचत न गाना के नाम मय परत रूप रस गंध ५ पाचने न ईश्वर
के नाम त्वचा चक्षु श्राव सोत्र रसना ५ पाचक मइन्द्रि के नाम वाक चरन घानी ५
स्था उदा चार अंतस्करण के नाम मन चित्त बुद्ध जहंकार पविस मो जीव २५
छविस मो महा विष्णु कहिये सुदुस तो एरा कहिये नारायण सेव साई छिरोध
कसाई अधिदेव ईश्वर सताइल मो हिरन गरम जीति न लन मरन व वल

जगत अंकुर महद वल गरमो दि कसाई वृद्धति परव निरुग्न वल
वृद्धति परव निरुग्न वल

जगत अंकुर महद्वल. गरमोदिक साइ पदति पुरव निरुत वल.
अहोइसो अद्वल. अद्वल के नाम. अद्वल कहिये. अ
द्येनवल. कुटस्यवल. उतनतिलसो उतमपुतव. उतमपुतव के ना
म. अद्वरातित लचिदातद तित्यातद. विह नारिआतद परमा
नद. सेहेजातद. अर्धजातद इति पलवल के नाम श्री श्री लोपल
कारे लोपिंड और वलाड भयोहे. संपुरन वेराठ विह पुरान मे सेनी
का म्माहे. नृथ्याउ चेतोवधे. हेके. इतने. जो जन प्रथीति उवे हे लोक हे

तेजोजयवर्तकलिबेहे अथयौदालोककेनाम अतल वितल सुतल त
लातल असातल रसातल पातल १ अलोक भवलोका सरगलो
क मेहेरलोक गतलोक तपलोक सतलोक सुरमंडललोक
लाखजोनउंछो १००००० चंद्रमामंडल उंचोलाखजोन
दोलाव २००००० नक्षत्रलोकजोनमंडलतिनलाखउंछो ३०००००
बुधमंडललोक पाचलाखजोनउंछो ५००००० शुकलोक मंडल सात
लाखजोनउंछो ७००००० मंगलभोगलोक मंडल नौलाखजोनउं
छो ९००००० बृहस्पतिलोक मंडल नादलाख जे ३०००००

शुक्रलोक मंडल नादलाख जे ३०००००

चौ० ०००००० बृहस्पति लोक मंडल ग्गार ताव जो जन उं चो ११०
०००० शत्रु लोक मंडल तेरु ताव जो जन उं चो १३००००० सप्तारिषि
लोक मंडल वोद ताव जो जन उं चो १४००००० ध्रुव लोक वंधु ताव जो
जन उं चो १५००००० मेहे लोक एक करे वंधु ताव जो जन उं चो ११५
००००० जन लोक मंडल तिन करे वंधु ताव जो जन उं चो ३१५००००
० तप लोक मंडल ग्गार करे वंधु ताव जो जन उं चो १११५०००००
पु लोक मंडल तेई लोक करे वंधु ताव जो जन उं चो २२१५००००००

तिल विलिल सुतल तलातल महातल रसातल पातल १ सु
वल्लोक भवल्लोक लागलोक मेहेल्लोक जनलोक सुर
जमंडल १००००० पद्मलोक २००००० तक्षकमंडल ३
००००० बुधमंडल ५००००० अरुमंडल १००००० भोम
मंडल ८००००० धरुमंडल ११००००० सतिमंडल
१३००००० सप्तसिद्धिमंडल १४००००० कवलोकमंडल
१५००००० मरुलोकमंडल ३१५००००० जनलोकमंडल

३१५००००० तल्लोकमंडल १११५००००० सत्यलोकमंड
१३३१५००००० दिति यरुति हा. पाअनंत प्रकृष्ट भगवान्ति

३९५००००० तत्तल्लोक मंडल १११५००००० तत्तल्लोक मंड

ल २३९५००००० इति यदिति हा. पा. अनंत प्रत्तुष भगवा नु जि

ह. इति यद श्री वेरा ह कि हकि क मत नथा प्रतिलै प्र एनः ॥

अथ चो विस ओता ह सन का दिक. १. रि वि देव २ प्रति पत रजा ३

क पिल ४ दता नये ५ वेद व्या स ६ नर ता ७ वरा ८ नार द ९ हं १०

जे सा ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०

वता १५५ मधु क धु वरा ह. टलि ह ८ यका ए अवता ए लत

पुगमें भये वावन परसराम राम कतिन अवतार वेता पुगमें भये
श्री कृष्ण रहे येक अवतार द्वापर युग में बुधने ह कलं किय अवतार
ह कल युग में ३४ संप्रदाय १ वंश कि को सिता चो विम अवतार
रे की ह कि कत संप्रदाय १ युग

स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुवरणाय नमः ॥ श्री वि

स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीगुरुवरणारंभे नमः॥ श्रीवि
ष्णुकादकाभ्यां नमः॥ अथर्वेराटपुराणाप्रवक्ष्यामि॥ विंशब्रह्मावि
विशेषितं॥ पंचतत्त्वपविशप्रकृति॥ त्रिगुणत्रिशुभ्यः॥ पंचदेव
ता॥ त्रीगुणत्रयदेवता॥ सप्तवाताल॥ वतुदशभवन॥ सप्तब्रह्म
ड॥ एकविंशस्वर्ग॥ एकविंशब्रह्मांड॥ नवकुलीनाग॥ अष्ट
कुलिपर्वत॥ नवलक्ष्मतारा॥ वंद्यसुर्जे देवता॥ अठारभारवन
स्पति॥ नवखंडसप्तदिपवृथी॥ सप्तशागर॥ नवशयनवासिकोठि
नदि॥ शप्तवारशविशतविंसनक्षेत्रा॥ अष्टविंशजोग॥ पंडुतिथि॥
सोहसराद॥ द्वादसराशी॥ द्वादशलक्ष्म॥ अष्टपर्वत॥ तिशसुहृत्॥
साठिघरि॥ आठपहर॥ रातिः दिन॥ द्वादशआदित्य॥ सोडशव

ति
ह॥ तैस कोटि देवता ॥ वोशठि ये शिनि ॥ प्रच्छाओहन देत्य दानवा ॥ सव
ल अमुठिंग ॥ वोरासिभूत प्रेत ॥ निरांन वेकोटि डान्न पाल ॥ प्रच्छभेरुं
न वनाथ ॥ वोरासिल अजिवजोनि ॥ वारवेद ॥ षडुशास्त्र ॥ नव व्या
कर्न ॥ प्रच्छादश पुरान ॥ प्रच्छादश सस्मृति ॥ वाउन्नय निषदा ॥ वा
रिक तेव ॥ वारि वा नि ॥ वारि पानि ॥ वेद सूर्य पवन पानि ॥ प्रच्छासिश
ह अमषेखर ॥ एकल अमसिशह अपिरपेगेवर ॥ ददर्शन ॥ दद्यान
वे पावेड ॥ वारि दिशा ॥ वारि विदिशा ॥ दश दिक्पाल देवता ॥ वावून
अज्ञेय ॥ दशग ॥ दतिसभाज्या ॥ प्रच्छासति तिर्थ ॥ शप्तपुरी ॥ नव वषरा ॥
दद्यान वेकोटि मेघमात्रा ॥ निरांन वेकोटि वेडा ॥ खडबंक्ष वेडा ॥
अधा ॥ नवनाडि ॥ वरुतरी कोठा ॥ नवदार ॥ विषेड कपाला ॥ दारम
ददादश ॥ दारत्रयोदश ॥ दारवतुर्दस ॥ प्रच्छल भेदतिस ॥ कारण

दादश ॥ महाकारन दार एक ॥ पंचवायु ॥ दशपोन ॥ पो न भेददाद
स ॥ पो न वर्तुर्दश ॥ वायु वोरासि ॥ वायु वोशठि ॥ तिनशयसात्रि

दादश॥ महाकारनक्षर एक॥ पंचवायु॥ दशपौन॥ पौनभेददाद
श॥ पौनवर्तुर्दश॥ वायुवोरासि॥ वायुवोशठि॥ तिनशयसाठिअ
स्तमाला॥ तिशयसाठिशेधि॥ तिनशयसाठिवंध॥ तिनशयसा
ठिनाडि॥ तिनशयसाठिरंगनाम॥ तिनशयसाठिरंगनशाजो
लि॥ तिनशयसाठिवायु॥ वोशठिसंधि॥ शेधिभेदवहतरि॥
महानाडि एक॥ नाडिदादश॥ नाडिवोडश॥ नाडिवोविस॥
नाडिवतिस॥ नाडिछतिश॥ नाडिवोशठि॥ नाडिभेदवह
तरि॥ साधनाएकोतरशय॥ नाडितिनशयसाठि॥ नाडिश
हश्र॥ सर्वनाडिवहतरिसहश्रप्रमाना॥ विशवांगुलि॥ विसन
व॥ एकविंशहाथप्रात॥ वतिशयंत॥ वर्तुर्दशपांसुलि॥ दा
दशज्यपांसुलि॥ नवसुत्र॥ एकसवागजहाड॥ सुकसवाहा

ब्रह्म ॥ एक जगत्ता ॥ एक षड्मुख हाड ॥ नव अंगुलि तिली प्रमा ॥
॥ एक सभ ॥ एक वर हाड ॥ नव अंगुलि तिली ॥ एक अंगुलि
॥ नव दश अंगुलि फेर सा ॥ तिन अंगुलि पा ॥ दो वक्ता एक की हा ॥
अष्ट वक्ता ॥ अष्ट हात कि का था ॥ अष्ट कला हर ब्रह्म ॥ षोडश कला
ब्रह्म कि ॥ द्वादश कला नद कि ॥ अष्ट कला पवन कि ॥ षोडश कला वद
कि ॥ सहस्र कला अग्नि कि ॥ द्वादश कला मय कि ॥ द्वादश कला वायव्य कि ॥
अष्ट कला पृथ्वी कि ॥ द्वादश कला पाणि कि ॥ अष्ट कला अश्व कला अश्व
स कि ॥ अष्ट कला सिध कि ॥ अष्ट कला अश्व कला अश्व कि ॥ वनि शल
मन का ॥ वनि शल क्षिण सिध का ॥ अष्ट गमार्ग योग का ॥ षट्मा
स प्रारंभ योग का ॥ द्वादश कला वर महा प्रारंभ योग का ॥ द्वादश कला
गोरंभ ॥ अष्ट महा दत्त कि था ॥ द्वादश अंगुलि पर धाम श्री शंभूना शस
मा धिला गि ॥ अष्ट अंगुलि ध्यान नटल ति ॥ पर धाम शान ॥ अष्ट अंगुलि

नवरंवेदपुत्रिहोई॥ सकलसरिकेसपुदिपुत्रिहोई॥ सर्वनाडिकेअच्छाविश
 संधिहोई॥ ताकेअच्छाविंसनभ्रत्रहोई॥ तेकेसताईसयागहोई॥ दसईद्रिके
 सदिआलहोई॥ वहतरिकेवहतरिनाडितेकेवहतरीगंगाहोई॥ अठ
 सठिनाडिकेअठसठितिर्थहोई॥ वासठिसरिरकेसंधि॥ ताकेवोसठिया
 गिनिहोई॥ सकलसंधिसंधिमध्येसकलदेवताहोई॥ सकलदानवदेवःप
 त्रिकिनरःभूतप्रेतःसवालाषकुटिंगःसकलएकेसरिरमध्येवसे॥ ॥ अथ
 खानिस्थानप्रवशामि॥ खेतर्जवानि॥ अंडर्जखानि॥ अदिजरखानि॥ इ
 तिवत्पारीखानिहोई॥ खेतर्जखानिमस्तकवसे॥ अंडर्जखानिहृदयवसे॥
 जोर्जखानिवदरवसे॥ अदिजरखानित्ववावसे॥ सरिरमध्येवासीखानिवसे
 खानिकेकोनजिवहोई॥ कथोदेवमहेस्वरं॥ ईश्वरोवाव॥ अतर्जखानिके
 जिवएकविंसलक्षानि॥ कोनकोनजिव॥ नवलक्षतारा॥ वारिखामघमा

ला॥ अष्टलाषपरवतमाला॥ इति एविंसलाषखेदर्जखानिकेहोईगाअंडज
 खानिकेजिवएविंसलक्षानि॥ तेकोनकोनजिव॥ नवलक्षनागकुलि॥ व
 त्पारीलाषजिवजलवर॥ अष्टलाषपंक्षिभाषा॥ सकलविंसलक्ष

ला॥ अथ लाष परवत्तमाला॥ इति एविंसलाषखे दर्ज खा निके होइ ॥ प्रडज
धानिके जिव स्वविंसल आनि॥ ते को न को न जिव॥ नवल लाष नाग कुलि॥ व
त्वा री लाष जिव जलवर॥ अथ लाष पंभिभारा॥ एक विंस अं दर्ज धानि
होई॥ जो जखानिके जिव स्वविंशलाख॥ ताके जिव॥ नवल लाष दीपदा॥ वारि
लाष वतुष्यदा॥ अथ लाष खरिव भारा॥ जो जखानिके जिव होई॥ इति अदि
जाषानिके जिव कथिते॥ ते नवलारवा त्रिगंधा॥ वत्वा री लाख अंगंधा॥
अथ लाष स्कंदमूल॥ इति अदि का जिव होई॥ ॥ इती वारी धानि वो
रासिलाष जिव बोधन होई सकल सरिर मध्ये कमलता कि मध्येः अथोतर
सप्तधा विरोग पिडा वसे॥ वतिसलभीनः वतिस दांत काजरा मूल मध्ये मा
नुष कि होई॥ सरिर मध्ये वारि वावा बो लिजे॥ ते को न को न वावा होई॥ प
सव वावा॥ पस्यंति वावा॥ मध्ये मवावा॥ वैषरि वावा॥ पंचमि वलवानि॥
इति पंचमि वावा होई॥ वैषरि वाणिषट् दल मेवसे॥ अथ वर उत्पद्यते

ब्रह्मदेवतावसे ॥ मध्यमवाणि दसदलकमलमज्ज्यज्जुवेदउत्पद्यते ॥
 विष्णुदेवतावसे ॥ पश्यंतिवा निदादसकवलमधेवसे ॥ साममदउत्पद्यते ॥
 महादेवदेवता ॥ पशवकानिषोडशदलकवलवसे ॥ अथवेदउत्पद्यते ॥ त्रि
 गुनइसारदेवता ॥ ब्रह्मवानिद्विदलकमजवसे ॥ सुभ्रमवेदउत्पद्यते ॥
 ॐ निरंजनदेवता ॥ इति पंचवेदहोई ॥ षट्दरशनके नामहोई ॥ धर्ति ॥
 अकाश ॥ २ ॥ पवन ॥ ३ ॥ पानि ॥ ४ ॥ वंडा ॥ ५ ॥ सूर्य ॥ ६ ॥ इति पिंडब्रह्मांड
 मे षट्दरशनके नामहोई ॥ प्रथमत्रिगुनमकहिरु ॥ राजश ॥ स्वातके ॥
 तामश ॥ राजशरूपिव्रह्मादेवता ॥ सतकरूपिविष्णुदेवता ॥ तामसरु
 ददेवता ॥ त्रयोदेवता ॥ त्रयोगुन ॥ त्रयो गुनके नाम ॥ अथसंन्य ॥
 दसंन्ये ॥ इति त्रिसंन्ये होई ॥ वीधिसुन्ये को निरासजाभि ॥ सुनौ देविप
 र्वतिस्त्रिंशंकथितं महागिनाज ॥ इति श्रीमहादेवपार्वतिसंवादे वैरा

ठपुराणे योगशास्त्रे पिंडब्रह्मांडतत्त्वज्ज्यज्जुवेदउत्पद्यते इति स्पष्टं ॥ ॥ ॥ अथपं
 तत्वकिं आदिकथितं ॥ सत्यं सत्यं वपार्वति ॥ अथमेदृष्टादृष्टाज्ज्यज्जुवेदउत्पद्यते ॥ पु
 रुषपरुषज्ज्यज्जुवेदउत्पद्यते ॥ परुषेवप्रसूतिज्ज्यज्जुवेदउत्पद्यते ॥ प्रकृतिर्ज्यज्जुवेदउत्पद्यते ॥ हे

ठपुराणे योगशास्त्रे पिंडब्रह्मांडतत्त्वोत्पद्यते दिति एष ठल ॥ ॥ ॥ अथ पं
तत्त्वकिं आदिकथितं ॥ सत्त्वं सत्त्वं व पार्वति ॥ अथ मे दृष्टा दृष्टो ज्ञान्य द्यते ॥ पु
रुष पुरुष उज्य द्यते ॥ पुरुषे व प्रकृति उज्यते ॥ प्रकृति ते उपजे हेतु ॥ हे
तुते उपजे महा तत्त्व ॥ महा तत्त्व ते उपजे अहंकार ॥ अहंकार के उपजे
त्रिगुण उंकार ते उपजे राजसः ॥ सात्त्विक उपजे विष्णुः ॥ मनः ॥ अरु स क
ल देवता ॥ तामस गुण ते भयं हं ॥ महा देवः पंच विदेः ॥ अरु पंच तत्त्वः ॥
इति आदि त्रयो गुणकाः ॥ इति आदि त्रयो गुणका प्रमानः ॥ अथ दस ई
द्विके नामः ॥ पंच ज्ञान ईद्विः ॥ ओं १ वक्त्र २ घ्राण ३ जिह्वा ४ त्वचा ५ अ
थ कर्म ईद्विः ॥ वाक् १ पाद २ पानि ३ उपस्थ ४ गूद ५ ॥ अथ पंच भूतः
॥ अग्नि १ वायु २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ ॥ इति पंच ईद्विका स्थूल
सरिर ॥ ॥

जाग्रतः प्रस्थाभ्रमते जीवः॥ पंचविधैके नाम॥ सद १ पर्स २ रूप ३ रस ४ गंध ५
 मन ६ बुद्धि ७ चित्त ८ अहंकार ९ इतित्वकारिप्रकारः॥ नवतत्त्वका लिंगसरि
 रप्रमाणः॥ स्वपनावस्थाभ्रमते जीवः॥ नवतत्त्वका सरिरविधं सकरे॥ तौ
 प्रावागवनतैः नवतत्त्वमवन्ति॥ इति यौविंशतत्त्वका सरिरः॥ पविसस
 वातत्त्वतेजिवप्रातिमा होईः॥ षड्विंशके परप्रातमा होईः॥ तेष्वत्त्व
 होईः॥ इति षड्विंशतत्त्वप्रमाणः॥ अथ पंचतत्त्वपञ्चाः॥ सद ते उप
 जे प्रकासः॥ प्रकासते पर्स वायु॥ पर्स वा पुन उपजे रूपतेजः॥ रूपतेज
 ते उपजे स्थातो यते उपजे गंधयथीः॥ इति पंचतत्त्व पविससप्रकृति के
 नामकथितेः॥ अथ यथिकरनामकथितं॥ अस्ति १ मास २ तो वा ३ नाडि ४
 तो भमे ५ यथि पंचगुणो प्रोक्तः॥ ब्रह्मज्ञान न भाषितं॥ लाल १ पुत्र २ प्रभे

द ३ रुधि ४ सुक्तं तथा ५ पंचगुणो प्रोक्तं ब्रह्मज्ञाने वभाषितं॥ अधा १ तृषा २
 निं द्रा ३ प्रालस्य ४ अंतिमेव य पतेज पंचगुणो प्रोक्तः ब्रह्मज्ञाने न भाषितं॥

८३ रुधिरं ४ सुक्तं तथा ५ पंचगुणो प्रोक्तं ब्रह्मज्ञानेन भाषितं ॥ अध्या १ तृष्ठा २
निं द्रा ३ प्रालस्य ४ अंतिमेव य पतेज पंचगुणो प्रोक्तः ब्रह्मज्ञानेन भाषितः ॥
गात्रन १ धात्रन २ वलगहनं ३ पशारणं ४ संकोचनस्था ५ वायुपंचगुणो प्रोक्तं
ब्रह्मज्ञानेन भाषितं ॥ प्राधा १ मोह २ लज्जा ३ राग ४ द्वेष ५ इति पंचतत्त्व पदिस
प्र कृतिप्रमानः ॥ सरिरमध्ये होई ॥ प्रथमं पंचतत्त्वकास्थान कथितं ॥ सत्य
मेव पर्वति ॥ प्राकासकास्थान दशमस्थान होई ॥ अवन दार दार वासि श्रो
त्र वासि वेसारं ॥ दाहिन श्रोत्र वासि कासः ॥ सद श्रुणु सुप्राहारं ॥ मोहवोहा
रं ॥ प्राकासकि भार्या प्रादित्यसक्तिः ॥ प्राका प्रासन वुनाले स्थानः ॥ प्रा
कासकि वर्णस सप्रभाः ॥ प्राकासका देवता निरंजन नाथ होई ॥ इति
प्राकासगृहस्थान होई ॥ वायुका भूवन नाभिस्थानः वाका दार नासि
का ॥ वायुका वेसार ईडा ॥ निकास पिंगलानाडिः ॥ गंध प्राहारं ॥ डि

भवा षंडव्योहारं॥ पवन कि वंवलसक्तिः॥ पवनका प्रासनवकाथान॥ वा
युकावर्णितप्रभाः॥ वायुका देवता त्रिगुन ईश्वरा॥ इति वायुका प्रकार
थानः॥ अथ तेजका भवन कुंडलीथान होईः॥ तेजका द्वारवडूः॥ वामव
डू प्रणीकापेसारः॥ दाहि वडू प्राणिका निकसः॥ रूपप्रहारं॥ क्रोध
वोहारं॥ अग्नि की तेज वंतीसक्ति॥ तेजका प्रासनतिलीस्थाने॥ तेजका र
क्तवर्ण॥ तेजका देवता रुद्रनाथः॥ इति तेजका स्थान होई॥ त्ववास्था
नेलगाठ भवण॥ तोयाका द्वारजि क्राईदि॥ तोयकापेसारजि क्रा॥ तोया
कानिसईदि॥ जोषिताप्राहारं॥ विषवेवोहारं॥ तोयाकिकाम आशक्ति॥
प्रासनके फसा॥ वर्णकृटिकप्रभा॥ तोयाका देवता श्रीविष्णुनाथः॥ इति

तोयको प्रकारः॥ पृथिका भवण प्रळदलकमला॥ द्वारमुषे गुदे दो होए
पेसारसाराये॥ तिकासरायराये॥ सारे तिके साराये॥ तिका

तोयको प्रकारः॥ पृथिका भवणः प्रल दलक मला॥ दारमुषे गुदे दो होल॥
पैसारमुषाये॥ निकास गुलदारे॥ बाये पिये प्रा हरं॥ लमला भव्यो हरं॥
पृथिकि सक्ति जटि॥ प्रासन कले जे वृणी सोवर्ण प्रभा॥ देवता श्री वृत्ता प्रजापति॥
इति पृथिका ग्रह स्थान होई॥ प्रथ पंचतत्व का सुभाव कथितं॥ पृथिका स्वभा
वशीतला॥ तेज का स्वभाव उष्ण॥ वायु का स्वभाव वंचलः॥ प्राकास का भाव
शुभ्रा॥ इति पंचतत्व का स्वभाव होई॥ प्रथ पंचतत्व का प्रासन कथितं॥
पृथिका प्रासन वा कले॥ प्राप का प्रासन लंघ्वा॥ तेज का प्रासन उभा
ठाडा॥ वायु का प्रासन वल ताः॥ प्राकास का प्रासन प्रटला॥ इति पं
चतत्व का प्रासन होई॥ प्रथ पंचतत्व का प्राचारः॥ पृथिका प्राचार
ब्रमा रूप॥ प्राप का प्राचार जातः॥ तेज को प्राचार दयाः॥ वायु को प्रा

वर धर्म ॥ आकास को प्राव सत ॥ इति पंचतत्त्वा^प प्रा वार होई ॥ प्रथम पंचत
त्त्वा का त्वद कथितं ॥ पृथिवी का स्वाद मधुरा ॥ प्रा का स का स्वाद लव नः ॥ तेज का स्वा
द वर का ॥ वायु का स्वाद वाटा ॥ प्रा का स का स्वाद कड वा ॥ प्रथम पंचतत्त्व किस
क्तिः ॥ पृथिवी किस क गुण सक्ति ॥ तो या कि दश गुण शक्ति ॥ तेज की सत गुण शक्ति ॥
वायु किस सहश्र गुण शक्ति ॥ प्रा का स कि दश सहश्र गुण सक्ति ॥ ॐ कार कि प्र
नंत सहश्र गुण शक्ति ॥ इति पंचतत्त्व कि शक्ति प्रमाणः ॥ अणो देवि मार्वति ई
श्वरों कथित महामिज्ञान ॥ इति श्री महो देव पार्वती से बो दे वैराट् पु राणे जोग
शास्त्रे पंचतत्त्व ग्रह्या न प्रादि ॥ पति त्रि नी य पटलः ॥ ३ ॥ प्रथम जोग रंभ अ
भाश कथितः यतु दश भवन के नामः ॥ प्रतलः वितलः २ सुतल ३ रशा तल ४
तला तल ५ महितल ६ भुतल ७ इति श न पाताल होई ॥ भुलोक ८ भर्म लोक ९

शिव लोक १० महर्लोक ११ जन लोक १२ तप लोक १३ सत्ये लोक १४ इति
वत द्वा भवनं तामः ॥ प्रथम शिर मध्ये थान कथ्यते ॥ तत्र पादयो तितलः

शिवलोक १० महर्लोक ११ जनलोक १२ तपलोक १३ सत्यलोक १४ इति
वतुर्दश भवनं नामः ॥ अथ शरिर मध्ये स्थान कथ्यते ॥ तत्र पादयोः कितलः
गुल्फयोः सुतलतः पिडिवशैः रसान्तलः घुडवक्त्रवसैः अतल गंभीरव
क्त्रवसैः महितलः मूलवक्त्रवसैः मुताल मेढ्रवक्त्रवसैः इति सप्त
प्रातालस्थानः ॥ भूर्लोकः लिंगस्थः भुवर्लोकः नाभि मण्डलेः
शिवलोकः वदर उद्वेगः महर्लोकः ऊरुस्थानं वः जनलोकः कंठदेश
योः ॥ तपलोकः नासिकाग्रे सत्यलोकः ललाटयोः ॥ इति वतुर्दश भ
वनः शरिरकेः ॥ तस्योपरि सप्त वलाङ्कः के नाम कथितः ॥ धूम्रवलाङ्क
१ आकासवलाङ्क २ सुमेधवलाङ्क ३ परमसुमेधवलाङ्क ४















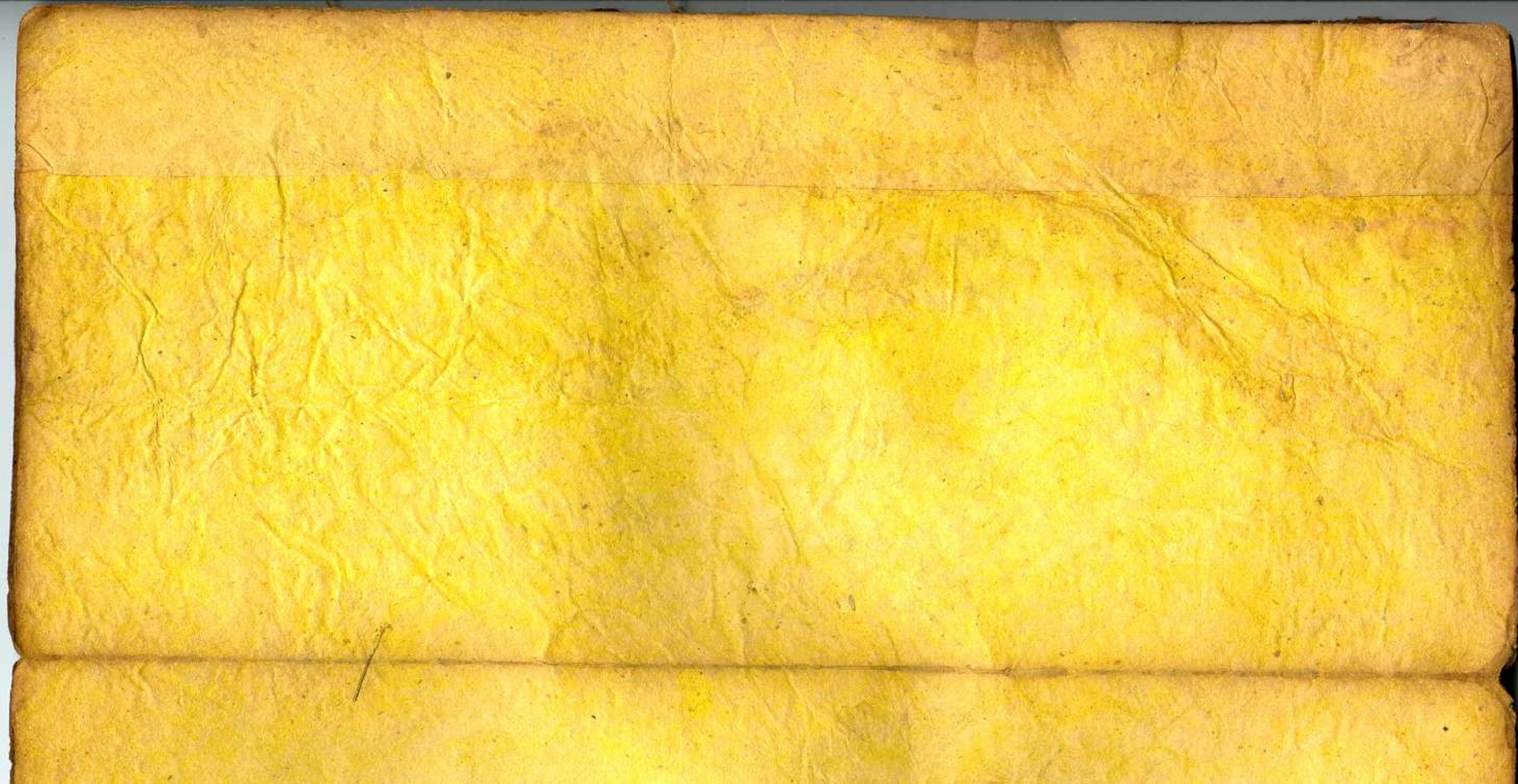


















महाराष्ट्र

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

Handwritten text in Devanagari script, likely a continuation of the previous page. The text is written in a cursive style and appears to be a list or a series of entries, possibly related to the 'संज्ञा' (Signs) mentioned in the header. The text is partially obscured by the binding of the manuscript.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ २ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ३ ॥
 दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमां चक्रावलीं ॥ ४ ॥
 भगवन्सर्वभूतानां महेश्वर ॥ ५ ॥
 उवाच ॥ ६ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ७ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ८ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ९ ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ २ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा ॥ ३ ॥
सर्वपापहर्त्रा ॥ ४ ॥
सर्वकलहहर्त्रा ॥ ५ ॥
सर्वमोक्षदाय ॥ ६ ॥
सर्वसुखदाय ॥ ७ ॥
सर्वसौख्यदाय ॥ ८ ॥
सर्वसमृद्धिदाय ॥ ९ ॥
सर्वसिद्धिदाय ॥ १० ॥
सर्वसम्पत्तिदाय ॥ ११ ॥
सर्वसन्तोषदाय ॥ १२ ॥
सर्वसन्तुष्टिदाय ॥ १३ ॥
सर्वसन्तुष्टिदाय ॥ १४ ॥
सर्वसन्तुष्टिदाय ॥ १५ ॥
सर्वसन्तुष्टिदाय ॥ १६ ॥
सर्वसन्तुष्टिदाय ॥ १७ ॥
सर्वसन्तुष्टिदाय ॥ १८ ॥
सर्वसन्तुष्टिदाय ॥ १९ ॥
सर्वसन्तुष्टिदाय ॥ २० ॥

॥ ३ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

121110

॥३॥॥३॥

सवित्री गणेशाय नमः ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥